P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-3* June- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

सतनामी विद्रोह में क्रांतिकारी महिलाओं की भूमिका

संजीव कुमार सिंह
पूर्व शोध छात्र,
इतिहास विभाग
श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय,
अलीगढ़

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में औरंगजेब काल में हुए सतनामी विद्रोह में महिलाओं की भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। शोध–पत्र के आधार पर प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है कि सतनामी विद्रोह में जितना योगदान पुरुषों का था उतना ही योगदान महिलाओं का भी था। इन वीरता की प्रतिमूर्ति महिलाओं में एक प्रमुख महिला मीनाक्षी थी, जिसने काठ के घोड़ों का आविष्कार किया था । इन घोडों पर भालों एवं तलवार आदि का कोई असर नहीं होता था जिस कारण ये जादुई घोडे प्रतीत होते थे। रेवाडी के पूर्व शासक शहबाज सिंह की पत्नी रानी भी सतनामी महिलाओं के ध्वज के साथ हो चली थी। उदै कौर नामक महिला ने सतनामी विद्रोह में अन्य महिलाओं का पूर्ण सहयोग किया था । अन्य क्रांतिकारी महिलाओं में सदा कुंवरी, श्यामाबाई, उदय कुंवरी, नान बाई, श्यामा देवी, बसंती एवं राजो प्रमुख थी जिन्होंने विद्रोही में मुगल शासक के विरूद्ध विद्रोह में वीरता का प्रदर्शन किया था ।

मुख्य शब्द : क्रांतिकारी सतनामी महिलाऐं, सतनामी पंथ, विद्रोह, मीनाक्षी, काठ के घोड़े

प्रस्तावना

औरंगजेब के काल में हुआ सतनामी विद्रोह एक अत्यंत महत्वपूर्ण विद्रोह था। प्रायः जब एक विद्यार्थी सतनामी विद्रोह का अध्ययन आरम्भ करता है तो वह पाता है कि इस विद्रोह में सैकड़ों सतनामी मारे गये अथवा शहीद हो गये। परन्तु एक दुविधा के रूप में अध्ययन के अन्तर्गत पर्याप्त मात्रा में यह ज्ञात नहीं हो पाता है कि पुरूषों के अतिरिक्त कितनी और किन–किन महिलाओं ने इस विद्रोह में भाग लिया अथवा भाग नहीं लिया। यह शोध पत्र उपरोक्त समस्या के समाधान हेतु एक प्रयास के रूप प्रस्तुत किया जा रहा है। इस शोध–पत्र में यह अवगत कराने का प्रयास किया गया है कि सतनामी विद्रोह में पुरूषों के अतिरिक्त महिलाओं ने किस स्तर पर इस विद्रोह में भाग लिया।

सतनामी पंथ की छः शाखाओं में नारनौल शाखा सबसे अधिक विस्तार वाली एवं सबसे पुरानी है। वर्तमान में नारनौल हरियाणा राज्य के महेन्द्रगढ़ जनपद की एक तहसील है। सतनामियों की नारनौल शाखा ने ही मई 1672 ई0 में औरंगजेब के प्रशासन के विरूद्ध विद्रोह किया था। इस विद्रोह के कारण ही सतनामी देश के नक्शे पर उभर कर सामने आये तथा इसकी विचारधारा और सिद्धांतों के प्रति न केवल देश के विभिन्न प्रदेशों के लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ अपितु इस शाखा ने विदेशियों का ध्यान भी अपनी ओर आकर्षित किया।[1]

औरंगजेब के शासनकाल में सीकर, झुन्झुनू परगना में एक कस्बा था एवं झुंझुनू नारनौल सरकार का परगना था। नारनौल सरकार की सीमा जयपुर (वर्तमान राजस्थान राज्य की राजधानी) राज्य से सटी हुई थी।[2] मध्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन की परम्परा में औरंगजेब को एक कट्टर बादशाह के रूप में जाना जाता है। औरंगजेब ने एक आदेश जारी करके हिन्दुओं पर हथियार लेकर चलने पर पाबंदी लगा दी थी।[3] औरंगजेब ने यह आदेश भी जारी किया था कि हिन्दू मुस्लिमों के समक्ष दास की तरह व्यवहार करें। 1668 ई0 में औरगजेब ने एक अन्य आदेश जारी करके हिन्दू धर्म और समाज के नेताओं को धार्मिक प्रवचन करने तथा धार्मिक उत्सवों, जुलूसों और मेलों पर प्रतिबंध लगा दिया था।[4] 1671 ई0 में औरंगजेब ने घोषणा करवाई कि धर्म परिवर्तन करने वालों को 4 आना प्रतिदिन के हिसाब से वजीफा दिया जायेगा और हाथियों पर बैठाकर घुमाकर सम्मानित किया जायेगा।[5] सतनामी सतगुरूओं ने सम्राट औरंगजेब के शाही फरमानों की अवहेलना ही नहीं कि बल्कि उसकी कट्टता की नीति का उत्तर आक्रमक नीति से देने का निश्चय किया। अपने निश्चय को आगे बढ़ाते हुए दिल्ली पर आक्रमण करके दिल्ली को जीत लेना उनका इरादा

बन चुका था। तत्कालीन लेखक साकी मुस्तैद खाँ लिखते हैं कि यह विद्रोह हिन्दुओं का स्वतंत्रता संग्राम बन गया, जिसका उद्देश्य स्वयं औरंगजेब पर आक्रमण करना था।[6] दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई विद्रोह की चिंगारियों के विरूद्ध सम्राट औरंगजेब को युद्ध संचलन के लिए स्वयं रण–क्षेत्र में प्रविष्टि होना पड़ा। 15 मार्च 1673 ई0 को औरंगजेब सेना एवं तोपखाने के साथ दिल्ली से रवाना हुआ।[7] 16 मार्च 1673 ई0 को नारनौल पहुँचकर औरंगजेब ने युद्ध का शंखनाद किया तो प्रतिउत्तर में सतनामी सेना का संचालन वीरभान ने किया।[8]

तत्कालीन लेखक खाफी खाँ के अनुसार कई हजार सतनामी मारे गए और शेष बिखर कर भाग खडे हुए। लेकिन उनका पीछा करके बड़ी संख्या में काट डाले गए।[9] तत्कालीन लेखक मुस्तैद खाँ के अनुसार इस्लाम के वीरों ने बड़े जोश के साथ युद्ध किया और इन लोगों के खून से तलवारें रंगी। उदण्डता पूर्वक संघर्ष करने के पश्चात विद्रोही बिखर गए लेकिन उनका पीछा करके बड़ी संख्या में काट डाले गए।[10] जदुनाथ सरकार का कथन है कि सर्वाधिक दुर्दम युद्ध के पश्चात 20000 सतनामी युद्ध भूमि में शहीद हो गए तथा बहुत बड़ी संख्या में पीछा करके कत्ल कर दिए गए, बहुत ही कम बच सके और उस क्षेत्र को नास्तिकता शून्य कर दिया।[11] बहुत सी सतनामी महिलाओं ने 1672–73 ई0 के व्रिदोह में भाग लिया। सतनामी महिलाओं ने औरंगजेब के प्रशासन के विरूद्ध सतनामियों द्वारा छेड़े गए संघर्ष में अग्रिम भूमिका निभा कर न केवल उन्होंने सतनामियों के साहस और मनोबल को बनाए रखने में साहसिक भूमिका निभाई थी, अपितु उन्होंने अपने आश्चर्यजनक क्रिया–कलापों, अविष्कार तथा घोषणाओं द्वारा हिन्दू जमींदारों तथा जनसाधारण को भी इस विद्रोह में शामिल करने में सफलता प्राप्त की थी। जिसके फलस्वरूप विद्रोह लगभग एक वर्ष तक चलता रहा।

विद्रोह के आरम्भ से ही सतनामी स्त्रियों ने इसमें भाग लेना शुरू कर दिया था। स्थानीय जनश्रुति के अनुसार जब नारनौल का फौजदार कारतलब खॉ प्यादे की पिटाई करने वाले सतनामियों को पकड़ने के लिए अपने सैनिकों के साथ मान्दी गांव पहुंचा तो महिलाओं ने जिन्होंने पहले से ही छतों पर पत्थर इत्यादि एकत्र कर रखे थे, उन पर पत्थर बरसा कर उन्हें गांव में प्रवेश नहीं करने दिया था।

निम्नलिखित ज्ञात महिलाओं ने विद्रोह के दौरान अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी :– मीनाक्षी, रानी रेवाड़ी, उदै कोर, श्यामाबाई, संदा कुंवरी, धरमा बाई, गोमा बाई, उदय कुवंरी, नान बाई, श्यामादेवी, बसंती एवं राजो।

शोध–पत्र का उद्देश्य

जैसा कि विदित है कि एक वस्तुनिष्ठ शोध का उद्देश्य छिपे हुए सत्य का पता लगाना अथवा किसी घटना के बारे में नई जानकारी प्राप्त करना होता है। साथ ही घटना विशेष के संदर्भ में कारण–कार्य के सह–सम्बन्ध को समझना और उसका परीक्षण करना भी होता है। शोध–पत्र द्वारा यह प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है कि सतनामी विद्रोह में वह कौन वीर महिलायें थी जिन्होंने पुरूषों के साथ खड़े होकर अपना अमूल्य योगदान दिया साथ ही वह कौन से कारण थे जिनके द्वारा महिलाओं ने भी इस विद्रोह में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से भाग लिया।

शोध की परिकल्पना

शोध–पत्र के आधार शोध की संकल्पना (Concept) को अग्र बिन्दुओं के आधार पर व्याख्ति करने का प्रयास किया गया है–

1. शोध–पत्र की परिकल्पना प्रत्यक्ष रूप से सतनामी महिलाओं से सम्बद्ध हैं
2. प्रस्तुत शोध पत्र की अवधारण स्पष्ट है कि सतनामी विद्रोह में महिलाओं की भूमिका का निष्पक्ष (Objective) मूल्याकंन प्रस्तुत करना है।
3. शोध की परिकल्पना का आधार तात्कालिक ग्रंथ, रचनाऐं और परवर्ती प्रमाणिक एवं विश्वसनीय ग्रंथ है, जिनके आधार पर सतनामी विद्रोह में कारण–कार्य एवं तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध–पत्र की परिकल्पना प्रत्यक्ष रूप से व्यवहारिक एवं यथार्थ पर आधारित एक पूर्ण निष्पक्ष प्रयास है।

शोध प्रविधि

मध्यकालीन भारतीय इतिहास से सम्बन्धित तत्कालिक और परवर्ती ऐतिहासिक ग्रंथों का अध्ययन किया गया। शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु आँकड़ों एवं तथ्यों का संकलन किया गया, उसके उपरान्त प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया गया। 'सतनामी विद्रोह में क्रांतिकारी महिलाओं की भूमिका' विषय पर शोध–पत्र पूर्ण करने हेतु स्थापत्य एवं खण्डित स्मारकों का अध्ययन किया गया तथा साक्षात्कार विधि के आधार पर जनश्रुतियों एवं लोक कथाओं में छुपे हुए इतिहास (सबाल्टर्न प्रविधि) को जानने एवं समझने का प्रयास किया गया।

मीनाक्षी

सतनामी पंथ के धार्मिक साहित्य तथा अन्य उपलब्ध स्रोतों से विद्रोह के दौरान सतनामी महिला मीनाक्षी के कार्यों का तो विस्तृत उल्लेख मिलता है परन्तु दुर्भाग्य से उनके जीवन सम्बन्धी विवरण उपलब्ध नहीं होता। सम्मान स्वरूप उन्हें ''माता'' की उपाधि दी गई थी।

विद्रोह के फैलने पर विद्रोही सतनामियों के साहस और मनोबल को बनाए रखने तथा हिन्दू जमींदारों और जनसाधारण को आकर्षित करके विद्रोह में शामिल करने के उद्देश्य से एक वृद्ध सतनामी महिला जिसका नाम मीनाक्षी था, विद्रोही सतनामियों के मध्य भविष्यवक्ता बनकर उपस्थित हुई। उसने लोगों को जुल्म के खिलाफ मजबूती से लड़ने का आवाहन किया।[12] उसने उनमें यह कहकर साहस और शक्ति का संचार किया कि सतनामी अमर हैं और सतनामी लड़ता हुआ मारा जाता है तो उसको 70 जन्म तक सुख मिलता है। मीनाक्षी ने सतनामी महिलाओं को संगठित किया। सतनामी महिलाओं ने भी बढ़–चढ़ कर मीनाक्षी माता को सहयोग प्रदान किया। मीनाक्षी ने उनके सहयोग से ताबीज तैयार किए और उन्हें सतनामियों के झण्डों पर बांधकर घोषणा कर दी कि उसके अभिमन्त्र उसके झण्डे के नीचे लड़ने वालों को शत्रुओं के हथियारों के विरूद्ध अभेद्य बना देगें, और यदि

एक लड़ता हुआ गिर जाता है तो उसके स्थान पर अस्सी अन्य प्रकट हो जाएगें।[13] इससे शीघ्र ही मुगल सेना तथा जनसाधारण में यह अफवाह फैल गई कि सतनामी अमर हैं, उन पर तलवारों, तीरों तथा बन्दूक की गोलियों का कोई असर नहीं होता तथा उनके एक तीर या एक गोली से दो या तीन आदमी मारे जाते थे।[14] निराश हिन्दू जनता में साहस का संचार करके उसे विद्रोह में शामिल करने के लिए मीनाक्षी ने अन्य सतनामी महिलाओं के साथ मिलकर एक रोमांचकारी तरीका खोज निकाला। उसने काठ के घोड़ों का निर्माण करवाया। मीनाक्षी इन काठ के घोड़ों पर सतनामी महिलाओं के साथ चढ़कर सतनामी सेना के साथ, अग्र–सेना के रूप में आगे–आगे चलती थी।[15] वे अस्त्र–शस्त्र धारण किये रहती थीं।

काठ के इन घोड़ों की खोज मीनाक्षी ने की थी। इससे पूर्व लोग इनसे परिचित नहीं थे। ये काठ के बने होते थे और बहुत हल्के होते थे। ये असली घोड़ों के समान बने और सजे होते थे। काठ के बने होने के कारण तीरों और गोलियों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। इससे यह अफवाह फैल गई कि वे जादूई घोड़े हैं तभी उन पर तीरों और गोलियों का असर नहीं पड़ता। जैसा कि स्वयं तत्कालीन लेखक मुस्तैद खां ने लिखा है कि ''इन घोड़ों के कारण चारों तरफ जनसाधारण तथा मुगल सेना में तरह–तरह की अफवाहें फैल गई थी कि जैसे वे जादूई घोड़े थे जो सजीव घोड़ों की भान्ति चलते थे तथा उन पर हथियारों का कोई प्रभाव नहीं होता था, सतनामी स्त्रियाँ जादूगर थीं तथा वे तरह–तरह के जादू जानती थीं इत्यादि।[16] तत्पश्चात से इन काठ के घोड़ों को हिन्दू अपने शादी–विवाह के अवसरों पर असली घोड़ों की तरह नचाते आ रहे हैं।

मीनाक्षी के नेतृत्व में सतनामी स्त्रियों के साहसी और वीरतापूर्ण नेतृत्व ने निराशा में डूबी हिन्दू जनता तथा जमींदारों को आकर्षित कर लिया और वे नवीन उत्साह, साहस तथा हिम्मत से परिपूर्ण होकर औरंगजेब को चुनौती देने के लिए सतनामियों द्वारा छेड़े गए विद्रोह में कूद पड़े। इससे विद्रोहियों की संख्या अचानक बहुत बढ़ गई जिससे मुगल सेना में यह भ्रम उत्पन्न हो गया कि एक सतनामी विद्रोही की हत्या होने पर उसके स्थान पर 80 अन्य सतनामी पैदा हो जाते हैं। जैसा कि इस सम्बन्ध में तत्कालीन लेखक मुस्तैद खां ने अपनी पुस्तक में लिखा है ''वे अचानक इतनी बड़ी संख्या में एकत्रित हो गए जैसे कि सफेद चीटियां अपने बिलों से या टिड्डी दल आकाश से उतरा हो।''[17] इसके साथ ही मीनाक्षी और उसकी सहयोगी महिलाओं ने नारनौल नगर और उसके चारों ओर के कस्बों और गांवों में तथा झुंझुनूं और सीकर कस्बों एवं उनके चारों ओर के गांवों में तीव्रगति से घूमकर वहां के निवासियों को ललकार कर विद्रोह में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

उनका यह परिश्रम रंग लाया। इन सभी क्षेत्रों के असन्तुष्ट हिन्दू लोग निरन्तर सतनामियों के विद्रोह में कूद रहे थे। कई राजपूत मुखिए तथा जमींदार लडने के लिए आए।[18] इस सम्बन्ध में तत्कालीन इतिहासकार मुस्तैद खां ने लिखा है कि ''वृद्ध जादूगरनी द्वारा यह प्रचार किया गया कि यह हिन्दुओं का स्वतंत्रता संग्राम था जिसका ध्येय स्वंय औरंगजेब पर आक्रमण करना था और उसने सतनामियों को अपने जादू से गोली के वार से अभेद्य बना दिया था। इस अफवाह से इस क्रिया को बहुत प्रेरणा मिली और सतनामी विद्रोह ने शीघ्र ही धार्मिक रूप ले लिया।''[19]

मीनाक्षी की सलाहनुसार सतनामी महिलाएं, स्थानीय जनश्रुति के अनुसार युद्ध क्षेत्र में रवाना होने से पूर्व भांग के पानी में गूंथे आटे की एक–एक रोटी प्रत्येक सतनामियों को खिलाती थीं ताकि वे निर्भय होकर संघर्ष करते रहें। इस प्रकार मीनाक्षी ने संघर्ष की रंगत ही बदल कर रख दी थी।[20]

विद्रोह के दमन के पश्चात मीनाक्षी तथा उसकी सहयोग सतनामी महिलाओं का क्या हुआ, दुर्भाग्य से इसका कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। लेकिन इतना सत्य है कि इस महिला के हौंसले तथा साहस ने सतनामी विद्रोह को मुगलों के लिए एक बड़ी चुनौती बना दिया था।

रानी रेवाड़ी

''रानी की डयोढी'' रेवाड़ी के कुंवर राव बिजेन्द्र सिंह[21] के संग्राहलय में उपलब्ध हस्तलिखित राजकीय दस्तावेजों से यह तथ्य अभर कर सामने आया है कि तत्कालीन रेवाडी के पूर्व शासक राव शहबाज सिंह की पत्नी, जिनका नाम रानी थी, ने सतनामी विद्रोह के दौरान अहीरवाल क्षेत्र की महिलाओं को संगठित करके बढचढ़ कर विद्रोह में भाग लिया। रानी के कारण ही रेवाडी और इसके चारों तरफ के क्षेत्रों के जमींदारों तथा जनसाधारण ने सतनामी विद्रोहियों का भरपूर साथ दिया अन्यथा सम्भवत् यह विद्रोह इतना विकराल रूप धारण नहीं कर पाता। रानी नंगली गाधा की निवासी थी। बादशाह शाहजहां के शासनकाल में राव शहबाज सिंह रेवाडी रियासत के शासक थे। परन्तु 1658 ई. के उत्तराधिकार युद्ध में राव शहबाज सिंह द्वारा दारा शिकोह का पक्ष लेने के कारण औरंगजेब ने सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात उसकी रियासत जब्त कर ली थी। गद्दी छिनने के कारण राव शहबाज सिंह और उसकी पत्नी रानी औरंगजेब से रूष्ट थे। अतः 1673 ई. में सतनामी विद्रोही निरन्तर विजय प्राप्त करते हुए जब रेवाड़ी पहुंचे तो राव शहबाज सिंह और रानी अपनी जनता के साथ विद्रोह में कूद पड़े। सतनामी महिलाओं को काठ के घोड़ों पर सवार अग्रिम पक्ति में चलते देखकर रानी का खून भी उबाल खा गया और वह भी अहीरवाल की उत्साही महिलाओं को संगठित करके विद्रोही सतनामी महिलाओं से जा मिली। रानी के इस वीरतापूर्ण और साहसिक कार्य से प्रेरित होकर बड़ी संख्या में अहीरवाल क्षेत्र की महिलाएं धीरे–धीरे करके सतनामी झण्डे के नीचे आ खड़ी हुई। राव शहबाज सिंह और रानी के सतनामी विद्रोहियों के झण्डे के नीचे आ जाने के कारण अहीरवाल क्षेत्र के जमींदारों और असन्तुष्ट हिन्दुओं को आन्दोलित कर दिया और वे औरंगजेब के अत्याचारी और कट्टरवादी प्रशासन को उखाड़ फैंकन के लिए विद्रोह में कूद पड़े। जिसके फलस्वरूप समस्त अहीरवाल क्षेत्र विद्रोह की आग में धधक उठा।

विद्रोह की ज्वाला पर नियन्त्रण पाने के लिए औरंगजेब ने एक लाख की सेना भेजी। लेकिन उनका

आतंक इतना अधिक था कि जब वह सेना रेवाडी के निकट पहुंची तो उसकी हिम्मत जवाब दे गई और वह बिना लडे ही भाग खडी हुई।[22] अहीरवाल के साहसी और वीर व्यक्तियों ने नारनौल के निर्णायक युद्ध में सतनामियों की तरफ से भाग लिया। 1673 ई. में रानी की मृत्यु हो गई। उनकी स्मृति के उनके पुत्र राव नन्दराम ने 1675 ई. में रेवाडी में ''रानी की डयोढी'' के नाम से एक महल का निर्माण करवाया जो आज भी सतनामी विद्रोह की गौरव गाथा समेटे हुए हैं।

उदै कोर

उदै कोर भरोंदा गाँव की निवासी थी, वह वहाँ अपने एकमात्र पुत्र गोकुलदास के साथ रहती थी। उसका पुत्र किसी गम्भीर बिमारी से ग्रसित था। उसने अनेक वैद्यो से उसका इलाज करवाया परन्तु किसी भी वैद्य की औषधि से वह निरोग नहीं हुआ। परन्तु सतनामी गुरू उदादास के आशीर्वाद से गोकुलदास शीघ्र ही रोग मुक्त हो गया। इस चमत्कार से प्रभावित होकर उदै कोर भी उदादास से दीक्षा प्राप्त करके पंथ में दीक्षित हो गई।[23] विद्रोह के आरम्भ होने पर उसने नारनौल आकर मीनाक्षी को पूरा सहयोग दिया था।

श्यामबाई तथा सदा कुवंरी

जोगीदास तथा बीरभान दोनों सगे भाई थे। जोगीदास बड़ा तथा बीरभान छोटे थे। वे कासली गांव के निवासी थे। श्यामा बाई जोगीदास की पत्नी थी। सदा कुवरी बीरभान की पत्नी थी। 1714 ई. में सतगुरू उदादास अपने पथ का प्रचार–प्रसार करने के लिए कासली गए थे। उनकी कीर्ति सुनकर श्यामा बाई तथा सदा कुवरी भी उनके दर्शन करने गई। वे उनकी ज्ञानोपदेश से बहुत प्रभावित हुई और उनसे दीक्षा प्राप्त करके सतनामी पंथ में प्रवेश किया।[24] दीक्षा लेने के समय श्यामा बाई तथा सदा कुवरी दोनों नवविवाहिता तथा युवा थी और युवावस्था में ही दीक्षा लेकर गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था। इन दोनों के कोई सन्तान नहीं थी। विद्रोह आरम्भ होने पर श्यामाबाई तथा सदा कुवरी ने अन्य सतनामी स्त्रियों के साथ नारनौल आकर विद्रोह में सक्रिय योगदान दिया था।

धरमा बाई तथा गोमा बाई

ये दोनों सगी बहनें थीं तथा दिल्ली की निवासी थीं। वे बनिया (वैश्य) परिवार से सम्बन्धित थी। सतनामी पंथ में दीक्षित होने से पूर्व दोनों विवाहित थीं। उदादास ने धरमाबाई को दीक्षा देकर सतनामी पंथ में शामिल कर लिया।

गोमाबाई, धरमा बाई की बहिन ने भी उदादास से दीक्षा प्राप्त करके सतनामी पंथ में प्रवेश किया था। वह विदूषी महिला भी थी। उसने 'उदा के दास अब मेरे प्राणपति' नामक बाणि की रचना की थी।[25] सतनामी विद्रोह के आरम्भ होने पर वे नारनौल पहुंची और अन्य सतनामी स्त्रियों के साथ मिलकर उन्होंने विद्रोह में प्रत्यक्ष योगदान दिया था।

उदय कुवंरी

वह वीरभान व जोगीदास की बुआ थी। अपने परिजनों की भान्ति उसने भी सतनामी पंथ की दीक्षा ली थी। उसका विवाह भरौदा गांव में हुआ था। विद्रोह आरम्भ होने पर उसने नारनौल पहुंच कर अन्य सतनामी स्त्रियों के साथ मिलकर विद्रोह मे सक्रिय योगदान दिया था। विद्रोह के दमन के पश्चात वह भरौदा लौटने में सफल रही थीं। सतनामी संघर्ष में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त करने वाले अपने भाई उदय सिंह तथा अपने भतीजों जोगीदास व बीरभान पर बहुत गर्व था। उदय कुवंरी ने नारनौल आकर विद्रोह के दौरान मीनाक्षी को भरपूर सहयोग दिया।[26]

नान बाई

स्थानीय जनश्रुति के अनुसार नान बाई मांदी गांव की सतनामी स्त्री थी। उसने विद्रोह आरम्भ होने के पहले दिन ही गांव की महिलाओं को संगठित करके छतों पर से ईंट–पत्थर इत्यादि फैंककर नारनौल के फौजदार कारतलब खाँ को, जो कि प्यादे को पीट–पीट कर अधमरा करने वाले मांदी गांव के सतनामियों को गिरफ्तार करने के लिए अपने सैनिकों के साथ आया था, गांव में प्रवेश नहीं करने दिया था। इस घटना के कुछ समय के बाद चारों दिशाओं के निकटवर्ती सतनामियों ने जो हथियारों से लैस होकर आए थे, कारतलब खाँ और उसके अधिकांश सैनिकों को घेर कर मार डाला और शेष मृत कारतलब खाँ के उसके घायल घोड़े समेत लेकर नारनौल भाग गए। कारतलब खाँ के मारे गए सैनिकों की कब्रे आज भी मांदी गांव के बाहर नारनौल जाने वाले कच्चे मार्ग पर जर्जर अवस्था में मौजूद हैं। यह मार्ग नारनौल में कड़ियों वाले मन्दिर के पास निकलता है।

विद्रोह के फैलने पर नान बाई ने स्थानीय सतनामी महिलाओं के सहयोग से विद्रोह में भाग लेने के लिए बाहर से आई सतनामी स्त्रियों के रहने और खाने–पीने का पूरा प्रबन्ध किया था। उसने भी उनके साथ मिलकर संघर्ष से सक्रिय योगदान दिया था। संघर्ष में उसके योगदान सम्बन्धी अनेक कथाएं प्रचलित हैं।[27]

श्यामा देवी, बसन्ती व राजो

ये तीनों सतनामी महिलाएं 1673 ई. के नारनौल के युद्ध में सतनामियों की पराजय के पश्चात बचकर निकलने में सफल रही और सतगुरू उदादास के ठिकाने रूस्तम खाँ के बगीचे, दिल्ली जा पहुंची। कुछ समय पश्चात् जब स्वयं औरंगजेब ने बगीचे पर आक्रमण किया तो वे सतगुरू उदादास के साथ स्वयं औरंगजेब द्वारा संचालित सेना के विरूद्ध वीरतापूर्वक युद्ध लड़कर अन्य स्त्री व पुरूष साधों के साथ वीरगति को प्राप्त हुई। डब्ल्यूएल. ऐलिसन के अनुसार ये तीनों स्त्रियाँ उदादास की आरम्भिक शिष्या थीं और दिल्ली में औरंगजेब के वजीर रूस्तम खाँ के बाग में अन्य सतनामी स्त्री व पुरूष साधों के साथ उदादास की देखरेख में पंथ के सिद्धांतों के अनुरूप जीवन यापन करते हुए भक्ति में लीन रहती थीं और उन्होंने अनेक वाणियों की भी रचना की थी।[28]

यह कितने साहस की बात है कि सतनामी नारियों ने विद्रोह को सफल बनाने के उद्देश्य से अपने जीवन के साथ ही साथ अपने घर–परिवार को भी दाँव पर लगा दिया। क्योंकि परिवार की स्त्रियों के युद्ध में शामिल हो जाने पर उस परिवार के बड़े–बूढ़े, जवान और बच्चे भी इस युद्ध में शामिल हो गए। वास्तव में हर सतनामी परिवार की तीन पीढ़ियों ने सर पर कफन बाँध

लिया था, क्योंकि यह सतनामियों के लिए जीवन–मरण का युद्ध था।

युद्धों के इतिहास में नारियों द्वारा ऐसा प्रदर्शन बहुत ही कम देखने को मिलता है कि जैसा अदम्स साहस, शौर्य और वीरता का प्रदर्शन सतनामी नारियों ने इस विद्रोह में किया था।

नारनौल का युद्ध एक असाधारण युद्ध था जो दो राजनैतिक शक्तियों के मध्य हुए युद्ध के विपरीत एक राजनैतिक शक्ति के विरूद्ध एक जनयुद्ध था, जिसमें सतनामियों को भयंकर पराजय का सामना करना पड़ा।

निष्कर्ष

शोध–पत्र के द्वारा यह प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है औरंगजेब काल में हुए सतनामी विद्रोह में जितना योगदान पुरूषों का था, उतना ही योगदान महिलाओं का था, जिस कारण इस विद्रोह की दशा एवं दिशा ही परिवर्तित हो गई थी। इस शोध पत्र के द्वारा यह भी दर्शाने का प्रयास किया गया है कि भारत में प्राचीनकाल से ही महिलाओं में संकट काल में अपने परिवार के साथ खडे होकर संकट का सामना करने हेतु अभूतपूर्व साहस रहा है एवं उनमें सदैव ही शूरवीरता के गुण विद्मान रहे हैं।

सुझाव

सतनामी महिलाओं से सम्बन्धित अन्य बिन्दुओं पर भी शोध किया जाना चाहिए, यथा परिवार के एकत्व में योगदान, रीति–रिवाजों एवं परम्पराओं के योगदान एवं समाज एवं संस्कृति के संवर्द्धन में योगदान आदि।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

1. Ellison, W.L. The Religious life of India: The Sadhas, Page-03, Pub.: Anmol Publication, Delhi-110051
2. *शागिल, मौलवी, अहतराम उलद्दीन साहब, रिसाला–ए–जेबा (उर्दू), पृष्ठ संख्या 108, हिन्दी अनुवाद–हरीकृष्ण मराठा, सदर, कानूनगों, नारनौल, 1934*
3. *मुस्तैद खाँ, साकी –मआसिर–ए–आलमगिरी, अंग्रेजी अनुवाद : सर जदुनाथ सरकार, पृष्ठ संख्या–185, प्रकाशक, द एशियाटिक सोसाइटी।*
4. Sarkar, Jadunath-Short History of Aurangzeb, Second Edition, Page No.-140 & 143, Published By: M.C. Sarkar & Sons Ltd. Calcutta, 1954
5. Ibid, Page No.-151
6. *मुस्तैद खाँ, साकी–मआसिर–ए–आलमगिरी, अंग्रेजी अनुवाद–सर जदुनाथ सरकार, पृष्ठ संख्या–185 प्रकाशक–द एशियाटिक सोसाइटी*
7. Sarkar, Jadunath History of Aurangzab Vat 3 Page No. 299
8. *साध, भोपत निशानी वाणी, हस्तलिखित पौथी, प्रकाशकः लोक संस्कृति शोधा संस्थान, चुरू, राजस्थान, 1965*
9. *खफी खाँ– 'मुंतखब–उल–लुबाब' Ed. By H.M. Elliot & John Dowson, Vol.-7 Page-210, हिन्दी अनुवाद मथुरा लाल शर्मा, प्रकाशक शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा ।*
10. *मुस्तैद खाँ, साकी –मआसिर–ए–आलमगिरी, अंग्रेजी अनुवाद : सर जदुनाथ सरकार, पृष्ठ संख्या–185, प्रकाशक, द एशियाटिक सोसाइटी।*
11. Sarkar, Jadunath-Short History of Aurangzeb, Third Edition, Page No.-154, Published By: M.C. Sarkar & Sons Ltd. Calcutta, 1954
12. *डॉ0 सूरजभान, नारनौल के सतनामी, पृष्ठ : 27 से 29, प्रकाशक : सर्च राज्य संसाधन केन्द्र, हरियाणा।*
13. Sarkar, Jadunath-Short History of Aurangzeb, Third Edition, Page No.-153, Published By: M.C. Sarkar & Sons Ltd. Calcutta, 1954
14. *खफी खाँ– 'मुंतखब–उल–लुबाब' Ed. By H.M. Elliot & John Dowson, Vol.-7 Page-210, हिन्दी अनुवाद मथुरा लाल शर्मा, प्रकाशक शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा ।*
15. *वही पृष्ठ : 211,*
16. *मुस्तैद खाँ, साकी –मआसिर–ए–आलमगिरी, अंग्रेजी अनुवाद : सर जदुनाथ सरकार, पृष्ठ संख्या–185, प्रकाशक, द एशियाटिक सोसाइटी।*
17. *वही, पृष्ठ : 389*
18. Sarkar, Jadunath-Short History of Aurangzeb, Third Edition, Page No.-153-154, Published By: M.C. Sarkar & Sons Ltd. Calcutta, 1954
19. *मुस्तैद खाँ, साकी –मआसिर–ए–आलमगिरी, अंग्रेजी अनुवाद : सर जदुनाथ सरकार, पृष्ठ संख्या–389, प्रकाशक, द एशियाटिक सोसाइटी।*
20. *डॉ0 सूरजभान, नारनौल के सतनामी, पृष्ठ : 27 प्रकाशक : सर्च राज्य संसाधन केन्द्र हरियाणा।*
21. *वर्तमान में कुँवर राव बिजेन्द्र सिंह रेवाडी के शासक राव शहबाज सिंह की 12वीं पीढ़ी में तथा 1857ई. के स्वतन्त्रता संग्राम के नायक राव गोपाल देव की 6वीं पीढ़ी में आते हैं।*
22. *खफी खाँ– 'मुंतखब–उल–लुबाब' Ed. By H.M. Elliot & John Dowson, Vol.-7 Page-295-96, हिन्दी अनुवाद मथुरा लाल शर्मा, प्रकाशक शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा ।*
23. *अमृत बाणी पृष्ठ : 145 से 148 प्रकाशक रमेश चन्द्र शर्मा, अशोक प्रिन्टिग प्रेस फर्रूखाबाद, उ0प्र0 1963।*
24. *वही वृष्ठ –148 से 50*
25. *सतनामी पंथ बाबा उदादास का निर्वाण ज्ञान, पृष्ठ : 327 प्रकाशक रमेश चन्द्र शर्मा, अशोक प्रिन्टिग प्रेस फर्रूखाबाद, उ0प्र0 1963 ।*
26. *अमृत बाणी पृष्ठ : 6 से 8, प्रकाशक रमेश चन्द्र शर्मा, अशोक प्रिन्टिग प्रेस फर्रूखाबाद, उ0प्र0।*
27. *राव रणवीर सिंह (रिटायर्ड मेजर): एक लेख निवासी : गांव व पोस्ट : मांदी तहसील नारनौल*
28. Ellison, W.L. The Religious life of India: The Sadhas, Page-112, 113, Pub.: Anmol Publication, Delhi-110051